ISBN : 978-81-954010-6-2

जानवरों में आपात कालिन प्राथमिक चिकित्सा

डा0 ज्ञानदेव सिंह
सहायक प्रध्यापक,
क्लिनिकल कम्पलेक्स,
बी. भी0 सी0 पटना, भारत

डा0 राजेश कुमार
सहायक प्रध्यापक,
पशु शल्य चिकित्सा,
बी. भी0 सी0 पटना, भारत

डा0 कौशल कुमार
सहायक प्रध्यापक,
पशु ब्याधि विज्ञान,
बी. भी0 सी0, पटना, भारत

Abstract / सारांश

गले में किसी कठोर चीज का फंसना

अचानक पशु चरते-चरते किसी कठोर चीज जेसे-मूली की जड़ आलू, सेब, आम की गुठली इत्यादि निगल जाता है। चूकि ये सब

 ISBN : 978-81-954010-6-2

चीजें कठोर और आकार में बड़ी होती है जिसके कारण यह खाद्यनली को पार नही कर पाती और अटक जाती है। इस अवस्था में पशु की कोषिष उस कठोर चीज को निगलने की कोषिष करता है और मुॅह से लार टपकता रहता है। पशु बैचैन रहता है तथा उसका पेट फूल जाता है। यदि खाद्यनली में कठोर चीज पूरी तरह से रूकावट बना देता हे तो जानवर पानी नहीं पी पाता है तथा पीया हुआ पानी नाक से बाहर आ जाता है। इस परिस्थिति में गले पर बाहर हाथ फेर कर कठोर बस्तु जो खाद्यनली में रूकावट पैदा कर रही है वो कहाँ पर है, जब पता लग जाये तो उसे हाथ से दबाकर तोड़ने की कोषिष करनी चाहिए। सामान्यतया ऐसी वस्तु टूट जाती है और टूट कर पेट में चली जाती है। ऐसा नहीं होने पर पशुचिकित्सक को बुलाकर दिखा लेना चाहिए।

अफरा या पेट फूलना

खुरधारी पशुओं द्वारा अधिक मात्रा में अनाज या बरसीम या चावल खा लेने पर यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। इस तरह में खाने से उत्पन्न गैस पेट से बाहर नहीं निकलती और पेट फूलने लगता है। इस परिस्थिति में पशुओं को पानी नहीं देना चाहिए और यदि पेट फूलता जाता है तो पशुचिकित्सक को खबर देना चाहिए। इस अवस्था में जरूरत पड़ने पर पेट में बायी तरफ उपर की ओर कोख से जहाँ गैस भरी हो तेज धार वाले चाकू जिसे आग में गर्म करने के बाद ठंडा करके छेद कर देना चाहिए, इस प्रयास से पशुओं को अफरा द्वारा दम घुटने से होने वाली मृत्यु से बचाया जा सकता है। इस अवस्था में घर में उपस्थित काला नमक 150 ग्राम, हींग 50 ग्राम, अजवाइन 20 ग्राम, तारपीन का तेल 125 मि0ली0 व अलसी का तेल 600 मि0ली0

 ISBN : 978-81-954010-6-2

मिश्रण बनाकर पिला दें।

100 ग्राम खानेवाला सोडा भी इस अवस्था में लाभकारी होता है। इस तरह के प्रयास से गैस बनना कम हो जाता है। आँत की गति बढ़ जाती है, तथा खाया हुआ भेजन जल्द बाहर निकल जाता हे।

पेशाब की थैली तथा पेशब की नही में पथरी का होना

यह रोग मुख्य रूप से बैलों में होता है। यह रोग खाने में खनिजों की अधिकता, पेषाब के रास्ते में संक्रमण या विटामिन -ए की कमी इत्यादि कारणों से होता है। पेषाब के रास्ते में पथरी कहीं भी बन सकती है जो कि बाद में आकार बड़ा होने पर मूत्र का रास्ता बन्द कर देती है। पेषाब के रास्ते में रूकावट होने की वजह से जानवर बेचैन हो जाता है, कई बार थोड़ा-थोड़ा पेषाब आता है, पशु पेट पर पैर मारता है, पेट की ओर बार-बार देखता है, नथूने सूखे रहते हैं। नाक से सांस छोड़ने पर श्वास में बिषेष प्रकार की गंन्ध आती है। जानवर खाना छोड़ देता है तथा शरीर तेजी से कमजोर हो जाता है। इस रोग के प्रारंभ में कुल्थी दाल का पानी तथा नौसादर की 2.5 ग्राम की गोली 15 दिन तक देना लाभदायक होता है। यह रोग जाड़े के दिनों में ज्यादा होता है, अतः इस रोग के रोकथाम के लिए नौसादर की गोली बड़े खुरधारी जानवरों में 1 गोली सुबह,षाम तथा छोटे खुरधरी जानवरों में आधी गोली सुबह-शाम दी जा सकती है। यदि दो दिनों में लाभ ना मिले तो तुरन्त पशुचिकित्सक को बुलाना चाहिए क्योंकि इसका निदान शल्य चिकित्सा ही है।

अचेत होने पर

जानवरों में यह अवस्था विभिन्न परिस्थितियों के कारण होते हैं

 ISBN : 978-81-954010-6-2

जैसे सिर में चोट लगना, पानी में डूबना, आक्सीजन की कमी, शरीर के तापमान का 1070थ् के उपर होना, विद्युत करेन्ट का झटका लगना, हृदय की धड़कन कम या ज्यादा होना, हृदयगति अवरूद्ध होना आदि। इस परिस्थिति में कृत्रिम श्वसन देना लाभकारी होता हे। सिर में चोट लगने पर ठंडे पानी की पट्टियाँ सिर पर रखते हैं विद्युत आघात लगने पर पैर व छाती की मालिष करना व पशु को गर्म रखना चाहिए। कृत्रिम साँस व हृदय की मालिष करना लाभकारी होता है। यदि पशु कुछ समय उपरान्त पानी पीने की स्थिति में हो तब उसे नमक व गुड मिलाकर पिलाना अत्यन्त लाभदायक होता हे।

सर्पदंश की अवस्था में

जानवरों में सर्प दंश पैरों में देखा जता है। जिस भाग पर सांप ने काटा हो उसके 3 इंच उपर रस्सी से कस कर बाँध देना चाहिए तथा जिस स्थान पर साँप काटा है वहाँ पर नये ब्लेड से चीरा लगा देना चाहिए ताकि खून के साथ-साथ बिष निकल जाये। पशुपालकों को इस बात का ध्यान जरूर देना चाहिए कि अगर साँप पैर में काटा है तो जानवर को खड़े अवस्था में करने का प्रयास किया जाये एवं पशु को शांत वातावरण में रखा जाये जब तक कि पशु चिकित्सक वहाँ पहुँच कर सर्प विष प्रतिरोधी दवा नहीं दे दें। पशु को चाय या काफी का पानी पिलाते रहना चाहिए जिससे पशु सो न पाये।

पागल कुत्ते के काटने पर

पशुपालकों को इस अवस्था में पागल कुत्ते द्वारा काटे गये स्थान को डेटाल तथा लाईफबाय या सेवलान साबुन से या कपड़े धोने वाले साबुन से कई बार धोना चाहिए। यदि सम्भव हो सके तो

 ISBN : 978-81-954010-6-2

कारबेलिक एसिड या पोटैशियम परमैगनेड (पाउडर) से घाव को जला देना चाहिए। जिस पशु को कुत्ते ने काटा हो, उसे मनुष्यों तथा जानवरों से दूर कर अविलम्ब पशु चिकित्सक से मिलकर टीके अवशय लगवाना चाहिए।

जहरीली दवा खाने पर

जानवर कभी-कभी जहरीले पौधें, कीटनाशक औषधियों, यूरिया, चूहे मारने की दवा, सायनाइड युक्त चारा जैसे ज्वार इत्यादि खाने से पशु जहरबाद से पीड़ित हो जाता है। बड़े पशु जेसे गाय, भैसों में उदर नालिका द्वारा अधिक से अधिक पानी पेट में डालते हैं और फिर निकालते हैं यह प्रक्रिया बार-बार करते हैं और यदि उदर नालिका की सुविधा न हो तो अधिक से अधिक पानी पिलाना चाहिए। छोटे पशुओं में गुनगुने पानी में नमक या पिसी सरसों पानी में डालकर पिलाने से उल्टी हो जाती है, जिससे आमाशय में भरा जहर निकल जाता है। आँतों में विष निष्कासन हेतु दस्तावर या बिरौचक औषधियों का प्रयोग भी करते हैं जैसे -मैगनीशियम सल्फेट बड़े पशु में 250 ग्राम व छोटे पशु में 100 ग्राम घोलकर पिलाते हैं या अलसी का तेल 500 ग्राम पिलाते हैं तत्पष्चात शीघ्र ही उपचार हेतु पशुचिकित्सक को बुलाना चाहिए। आवला का एक जमाल घोटा या भार नमक देने से तुरन्त दस्त हो जाता है तथा पिया जहर बाहर निकल जाता है।

योनिपथ /बेल निकलना

इसका कारण प्रोजेस्टीरान की कमी, इस्ट्रॉजन की अधिकता, संक्रमण तथा कैल्षियम तथा फास्फोरस की कमी है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण कारण कैल्षियम तथा फास्फोरस की कमी होती है अतः

ISBN : 978-81-954010-6-2

गाभिन पशु को 50-100 ग्राम कैल्षियम नित्य ब्याने के 1-2 महीने पूर्व से देते रहना चाहिए जिससे बेल निकलने की सम्भावना कम रहती है। इसमें खड़िया भी लाभप्रद है। अगर बेल निकल जाती है तो उसे डिटॉल या लाल दवा की 1:100 के अनुपात वाले घोल से साफ करके उसे हाथ के दबाव से अन्दर कर देना चाहिए। अगले पैर नीचे स्थान पर व पिछले पैर उँचे स्थान पर रखने चाहिए जिससे उस पर दबाव कम पड़े। कपड़े या रस्सी की जाली बनाकर बच्चेदानी को बाहर रस्सियों की सहायता से बाँध देते हैं। इसके लिए एक रस्सी पशु के उदर व दूसरी गर्दन के पास बाँधकर जाली वाली रस्सियों से इन्हे बाँध देते हैं पशु को कम मात्रा में पानी से मुक्त चारा देना चाहिए। पशुओं को तनावयुक्त परिस्थितियों से बचाना जरूरी है। अधिक जानकारी हेतु नजदीकी पशुचिकित्सक से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए।